



विद्या सर्वस्य भूषणम्
विद्या विद्या एवं प्रशिक्षण संस्थान
कोयंबा (छ.प्र.)

मॉड्यूल

माता उन्मुखीकरण कार्यक्रम क्रियान्वयन में विद्यालय प्रमुख की भूमिका



विद्या सर्वस्य भूषणम्
विद्या विद्या एवं प्रशिक्षण संस्थान
कोयंबा (छ.प्र.)



National Institute of Educational
Planning and Administration



विद्यालय नेतृत्व अकादमी

राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् छततीसगढ़

रायपुर - 492007

संरक्षण एवं मार्गदर्शन

श्री राजेश सिंह राणा (आईएएस) संचालक

एससीईआरटी, छत्तीसगढ़, रायपुर

डॉ योगेश शिवहरे

अतिरिक्त संचालक

एससीईआरटी, छत्तीसगढ़, रायपुर

श्रीमती पुष्पा किस्पोट्टा

उपसंचालक

एससीईआरटी, छत्तीसगढ़, रायपुर

एवं

प्राचार्य

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कोरबा

समन्वयक

श्री डी.दर्शन

नोडल अधिकारी स्कूल लीडरशिप अकादमी

एससीईआरटी, छत्तीसगढ़, रायपुर

माड्यूल लेखन समन्वयन

श्री गौरव शर्मा

व्याख्याता जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कोरबा

शीर्षक:- माता उन्मुखीकरण कार्यक्रम क्रियान्वयन में विद्यालय प्रमुख की भूमिका

लेखक

श्रीमती रिकु लोध
व्याख्याता डाईट कोरबा
जिला - कोरबा (छ.ग.)

उद्देश्य

- 1) पिछले अनुभव और वर्तमान आवश्यकताओं के आधार पर विशिष्ट लक्ष्यों का निर्धारण करना।
- 2) वैश्विक महामारी में शिक्षा के क्षेत्र में हुई क्षति को पूर्ण करने के लिए एवं प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा प्रदान करने, माताओं को सक्रिय रूप से जोड़ने की योजना बनाना।
- 3) बच्चे की शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी बढ़ाने योजना बनाना।
- 4) बेसिक शिक्षा में नवाचार कार्यक्रमों के क्रियान्वयन हेतु विभिन्न अभिकरणों, गतिविधियों तथा प्रभावी ढंग से कार्य करने वाले व्यक्तियों को सहायता प्रदान करने हेतु योजना बनाना।

की वर्ड्स

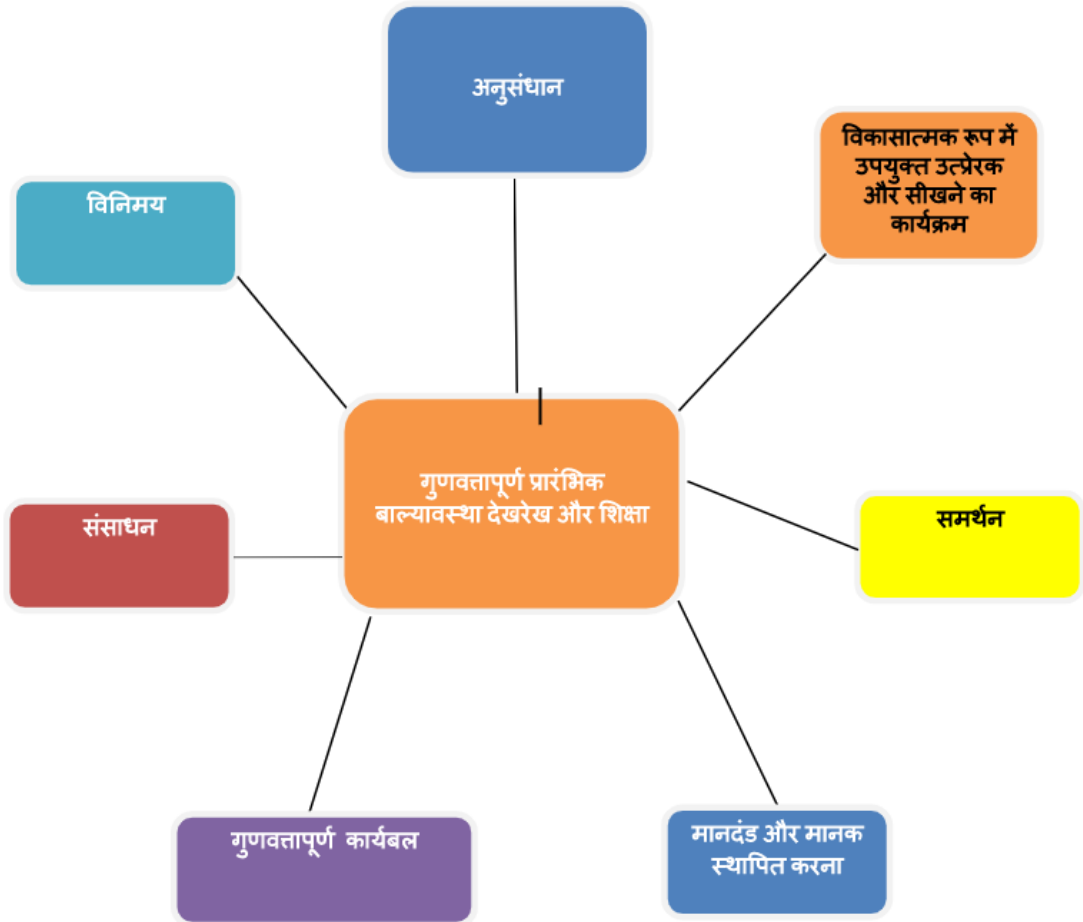
नवाचार कार्यक्रमों का क्रियान्वयन, प्रभावी गतिविधियां

प्रस्तावना

यह सत्य है कि बच्चे की प्रथम पाठशाला उसका परिवार होता है। बच्चा जो कुछ भी सीखता है वह अपने परिवार ,परिवेश व संगति में सीखता है। बच्चा स्कूल में तो केवल 5 से 6 घंटे बिताता है, परंतु अपना शेष समय अपने घर पर बिताता है। ऐसे में माता-पिता व शिक्षक दोनों की बराबरी की जिम्मेदारी होती है कि वह अपने बच्चों को संस्कार व शिष्टाचार का सबक सिखाएं। अकेले शिक्षकों या स्कूल प्रशासन पर सारी जिम्मेदारियां मढ़ना कहां तक उचित है? परिवार से संस्कारों का सबक सीखने के बाद विद्यालय की बारी आती है ,जहां बच्चों को किताबी शिक्षा के साथ-साथ नैतिक शिक्षा का भी पाठ पढ़ाया जाता है। अब वक्त आ गया है कि इन दोनों वर्गों को अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए, ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए बच्चों के रूप में भावी नागरिकों की एक ऐसी पौध तैयार करना, जो समाज व देश को, उत्कर्ष व उन्नति के शिखर पर ले जाएं। इसी के परिपालन में बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा के स्तर में गुणवत्ता या सुधार के लिए, नवाचार एवं विविध गतिविधियों को बढ़ावा देने की पहल, लगातार की जा रही है। इस कड़ी में माता जागरूकता अभियान सभी स्कूलों में प्रारंभ किया जा रहा है। इसका उद्देश्य माताओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित कर ,पठन-पाठन के स्तर को बेहतर बनाना है। बच्चों के घर की भाषा और स्कूल की भाषा अलग होने पर होने वाली परेशानियां और शुरुआती कक्षाओं में बच्चों के सीखने के लिए स्थानीय सामग्री के उपयोग के लिए आवश्यक मदद की जानी चाहिए। इसी के तहत शुरुआती दौर में विभिन्न नवाचारी गतिविधियों के माध्यम से माताओं द्वारा प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने को प्रोत्साहित करना है। जिसमें चलना, कूदना, रंग पहचान ,चित्र बनाना, मौखिक प्रश्नोत्तरी ,अक्षर व अंक पहचानना आदि गतिविधियां कराई जा सकती हैं

<https://youtu.be/4LsYODnQZiE>

Raipur : 'अंगना म शिक्षा' अभियान | बच्चों के साथ माताओं को दी जा रही शिक्षा | देखिए Report - YouTube



मुख्य सामग्री

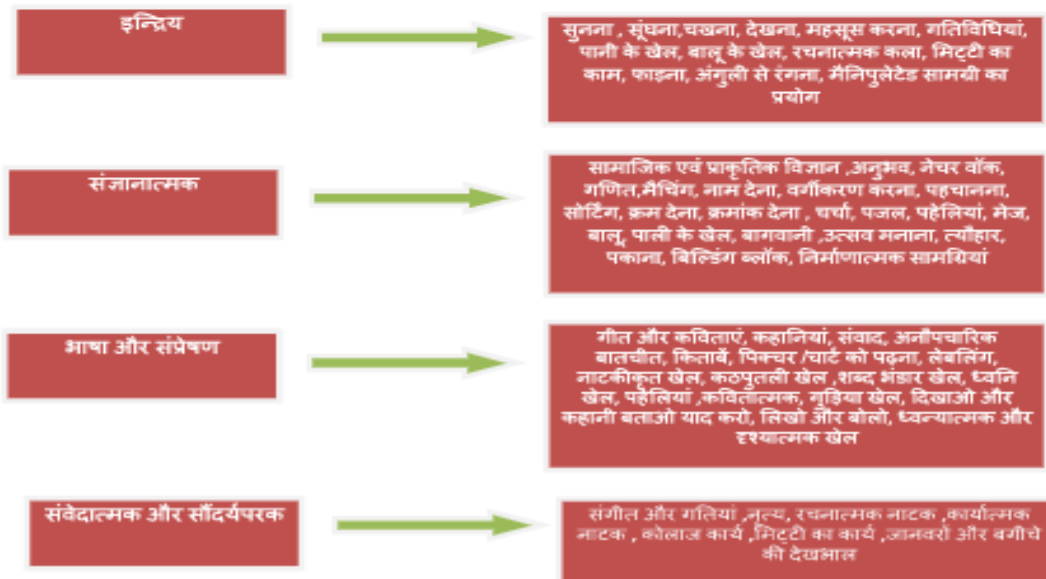
प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण संबंधी राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विद्यालय जाने योग्य उम्र के सभी बच्चों के सार्वभौम नामांकन, सार्वभौम ठहराव, तथा गुणवत्ता युक्त शिक्षा की संप्राप्ति पर अधिकाधिक बल दिया जा रहा है। इन सब प्रयासों के पश्चात भी अभी बहुत कुछ करना शेष है। केवल विद्यालयी शिक्षा की सुविधा का विस्तार ही पर्याप्त नहीं है, अपितु विषय वस्तु, अध्ययन सामग्री, बच्चों की रुचियों तथा समुदाय के जीवन के लिए प्रासंगिक हो तथा अधिक कार्य नीतियां एवं विधाएं ऐसी हो, जो संप्रेषण में सहायक हो। इसके लिए उत्तरदायित्यों के लिखित हस्तांतरण से कार्य की सिद्धि संभव नहीं, अपितु विद्यालयों में अनुकूल अधिगम वातावरण का निर्माण करके ही लक्ष्य की प्राप्ति सुनिश्चित की जा सकती है। मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से यह प्रमाणित हो चुका है कि गर्भावस्था में भी शिशु, मां तथा उससे संबंध परिवेश की अंतः क्रियाओं के प्रति सजग और संवेदनशील होता है। पैदा होने के बाद बच्चा बाहरी दुनिया के प्रत्यक्ष संपर्क में आता है। वह अपने गुण और प्रकृति के अनुरूप वातावरण से अंतः क्रिया करता है। माता-पिता अथवा शिक्षक शिक्षिका का मुख्य दायित्व, उस शिशु विशेष की प्रवृत्तियों और गुणों के अनुकूल वातावरण का निर्माण करना है। उत्तर शैशवावस्था में सामान्यतया बच्चा पूर्व प्राथमिक शिक्षा की परिधि में आ जाता है। मोंटेसरी किंडरगार्टन आदि शिक्षण पद्धतियों में शिशु की इन विशेषताओं के प्रति पर्याप्त संवेदनशीलता पाई जाती है। इन शिशु विद्यालयों में उनकी रुचि के अनुकूल क्रियाकलाप आयोजित किया जाना चाहिए और सामग्रियों का चयन किया जाना चाहिए। इससे उनकी ज्ञानेंद्रियों एवं कर्मेन्द्रियों के उचित विकास में सहायता मिलती है।

| आयु वर्ग | कार्यक्रमों के प्रकार |
|--------------|---|
| 3 वर्ष से कम | डे केयर/ क्रेच परिवार डे केयर |
| 3 से 5 वर्ष | बालवाड़ी, आंगनवाड़ी, नर्सरी किंडरगार्टन |
| 5 से 8 वर्ष | स्कूली शिक्षा कक्षा 1 और 2 |

भारतीय बच्चे की छवि का लेखा - जोखा

- 1) बाल जनसंख्या (0 से 6 वर्ष) 15.8 करोड़ है।
- 2) एक तिहाई शिशु जन्म के समय सामान्य से कम भार के साथ पैदा होते हैं।
- 3) केवल 42% (12 से 23 महीने) को ही पूरे संपूर्ण टीके लगते हैं।
- 4) 14 फ्रीसदी बच्चे टीकाकरण से बिल्कुल ही अछूते रहते हैं।
- 5) समूचे विश्व में सबसे अधिक संख्या में कुपोषित बच्चे भारत में हैं।
- 6) 2 वर्ष के नीचे के सभी बच्चों ने 47 फ्रीसदी कुपोषित हैं।
- 7) 0 से 6 वर्ष के सभी बालकों में 5 फ्रीसदी बच्चे गंभीर या कम तौर पर खून की कमी के रोग से पीड़ित है।
- 8) प्रत्येक वर्ष 2.5 करोड़ बच्चे जन्म लेते हैं।
- 9) शिशु मृत्यु दर बच्चों ने 70 बच्चे प्रति हजार है।
- 10) 6 करोड़ बच्चे (5 वर्ष से कम) गरीबी में रहते हैं।

11) इनमें से केवल 1 करोड़ 94लाख बच्चे (तीन से पांच) आईसीडीएस के तहत स्कूल पूर्व शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।



बच्चा अपने जीवन के 5 वर्ष पूरे करते ही प्राथमिक कक्षा में जाने योग्य हो जाता है। बचपन की चंचलताएं बाहरी संसार से अंतः क्रिया के कारण पुष्ट होकर स्थिर होने लगती हैं। वह बहुत कुछ बड़ों के जैसा व्यवहार करने का प्रयास करता है। चाल चलन, बोलचाल आदि में वह प्रौढ़ सा दिखाई पड़ने लगता है, इसीलिए मनोवैज्ञानिकों ने इस काल को आभासी (अवास्तविक) प्रौढ़ता का काल भी कहा है।

चाल चलन, बोलचाल आदि में वह प्रौढ़ रूप दिखाई पड़ने लगता है। इसी लिए मनोवैज्ञानिकों ने इस काल को आभासी अवास्तविक प्रौढ़ता का काल भी कहा है।



वि
का
स
के
क्रम

गणितीय
विकास

संख्या पहचानना वस्तुओं को
मौखिक
जोड़ना घटाना।

भाषाई विकास

अक्षर सुनकर दोहराना, चित्र को
देखकर विचार बता पाना

बौद्धिक
विकास

समान वस्तुओं का अगल वस्तु
के क्रम से
रखना।

समाजिक एवं
भावनात्मक
विकास

सभी हाव भाव से परिचित होना।
अपना परिचय देना। साफ सफाई का
ध्यान रखना।

शरीरिक एवं
क्रियात्मक
विकास

ढेड़ी मेढ़ी लकीर पर चलना। कागज
को काटकर/फोल्ड कर कुछ बनाना।
रंग भरना।

विद्यालय एवं घर स्तर पर आजमाने हेतु चमत्कारी गतिविधियां

1) रंग पहचानो

विद्यालयों में विभिन्न अवसरों पर रंग पहचानो के अंतर्गत गुब्बारे या बिंदी सजाओ जैसे खेलों का आयोजन किया जा सकता है। शाला की सामग्री परिसर के सामान एकक्षा में उपलब्ध चीजों के माध्यम से भी रंग पहचानने की गतिविधि कराई जा सकती है।

2) आकृति की पहचान

रंगोली निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन कर अलग-अलग आकार जैसे चकोन, तिकोन वृत्त आदि की समझ विकसित की जा सकती है। अलग-अलग आकृति की छात्र श्रृंखला बनाकर भी उनकी पहचान कराई जा सकती है। विभिन्न आकृतियों के त.ल.म. से भी इस पहचान को चिन्हित किया जा सकता है।

3) अक्षर व अंक पहचान

कैलेंडर में लिखे अंको से परिचित करा कर विद्यालय की दीवारों में उद्धृत वर्णमाला या अखबारों में दर्शाए एक जैसे वर्णों को गोल घेरकर दिखाओ जैसी गतिविधियां को कराया जा सकता है। शब्दों व अंको के खेल कराकर कहानी सुना कर एवस्तुओं की सहायता से जोड़ घटाव की क्रिया को कराया जा सकता है।

<https://www.youtube.com/watch?v=mNdyh3x5pCk&feature=youtu.be>

[\(320\) माता द्वारा प्रदत्त प्रारंभिक शिक्षा - YouTube](#)

4) कुछ नैतिक मूल्यों से अवगत कराने हेतु अभिवादन करना, सफाई का महत्व कचरा प्रबंधन, पानी का महत्व, बड़ों का सम्मान करना जैसी बातों को सिखाया जा सकता है। एकक्षा में ही नाट्यरूप में या खेल खेल में इन गतिविधियों को कराया जा सकता है।

सारांश

बच्चों के प्रारंभिक शिक्षा में माताएं और शिक्षक एक अटूट कड़ी हैं एजिनमें यदि एक कड़ी भी साथ ना दे तो बच्चे की शिक्षा में उल्लेखनीय प्रभाव पड़ता है। शिक्षक व माताओं के बीच बच्चों की शिक्षा हेतु नियमित संवाद स्थापित होना अत्यंत आवश्यक है। माताओं व समुदाय में आत्मविश्वास का निर्माण हो एकि वह भी बच्चों की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। समझने की आवश्यकता है कि स्कूल हेतु तैयारी की जिम्मेदारी एसिर्फ स्कूल या प्रशासन की नहीं बल्कि समुदाय व माता-पिता की भी भागीदारी है। कोशिश करनी चाहिए कि हर ग्रामीण विद्यालयीन क्षेत्र में स्मार्ट व लीडर माताओं का समूह बनाकर ए उनसे नियमित संपर्क कर ए गांव की अन्य माताओं को भी प्रशिक्षित करने व अन्य शैक्षणिक गतिविधियों को सिखाने प्रेरित कर सकें एताकि सभी माताएं बच्चों की शिक्षा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। प्रारंभिक बाल्यावस्था में बच्चों की उचित देखभाल एपोषण और उनका सर्वांगीण विकास महत्वपूर्ण है। बच्चों के स्कूल जाने से पहले की तैयारी आनंदमय माहौल में एंव खेल-खेल में किया जाना अत्यंत प्रभावकारी होगा। यह कार्य पूरे समाज का दायित्व होने के नाते बहुत महत्वपूर्ण है एऔर माताओं की क्षमता में वृद्धि कर ए उनकी सहभागिता से उक्त लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकेगा।

चिंतन के लिए प्रश्न

1. सीखने के आधार के रूप में खेल /नवाचार किस प्रकार सहायक है
2. स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा या मनोवैज्ञानिक विकास यह सभी, सह क्रियात्मक रूप से परस्पर संबंधित है एअपने विचार लिखिए।
3. गुणवत्ता के किन बुनियादी अथवा अनिवार्य तत्वों को चिन्हित किया जा सकता है?
4. अभिभावकों एपरिवारों और समुदायों को सशक्त बनाना क्यों महत्वपूर्ण है

स्रोत संदर्भ

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
3. प्रारंभिक शिक्षा दिशाएं और संभावनाएं, जगमोहन सिंह, राज्य शिक्षा संस्थान इलाहाबाद, राजकीय सेंट्रल पेडगॉजिकल इंस्टीट्यूट
4. राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा नीति 2022
5. गूगल सर्च



धन्यवाद